पंचगव्य : एक समीक्षा

डॉ. ए. पी. सिंह
प्रमुख अन्वेषक

डॉ. अशोक गौड़
सहायक आचार्य

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति
एवं वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र
राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर-334001 (राजस्थान)

पंचगव्य : एक समीक्षा

आयुर्वेद और संस्कृत में गाय से प्राप्त पदार्थ 'गव्य' कहलाते हैं, यथा गौमूत्र (देसी गाय का मूत्र), गौदुग्ध (देसी गाय का दूध) , गौघृत (देसी गाय का शुद्ध घी), गौदधि (गाय के दूध का दही), गोमय (देसी गाय का गोबर) । इन पांच गव्यों के विशिष्ट योग से पंचगव्य बनाया जाता है जिसका उल्लेख आयुर्वेद के प्राचीन एवं माननीय ग्रंथों यथा चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और वेदों में मिलता है । अथर्ववेद में लिखा है कि–

अनु सूर्यमुदयतां हृद्द्योतो हरिमा च ते ।
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दध्मसि ।।

अथर्ववेद 1.22.1.

भारतीय गौ नस्लें (Bos indicus; brahman cattle)अपने शारीरिक बनावट एवं गुणधर्मों के कारण विदेशी गायों (Bos taurus; humpless

cattle) की नस्लों से भिन्न जाति (species) की हैं और हमारे जीवन में सदैव से इनका अद्वितीय और विशिष्ट स्थान रहा है। गौ प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ के रूप में गौधन, गौमाता, कामधेनु जैसे संबोधनों से सम्माननीय और पूजनीय रही है । शहरीकरण और पाश्चात्य अन्धानुकरण के फलस्वरूप आज अधिकांश लोग देसी गाय को विदेशी गायों की तुलना में एक कम दूध देने वाला पशु मात्र मान बैठे हैं। आज की इस भाग–दौड़ भरी ज़िंदगी में हम प्रति और गौपालन से दूर होते जा रहे हैं और देसी गायों के परिलाभों और पारंपरिक ज्ञान को भुलाकर केवल बाज़ार में उपलब्ध वस्तुओं और दवाओं के चक्कर में अपना स्वास्थ्य और धन दोनों को गँवा रहे हैं ।

गावः श्रेष्ठा पवित्राश्च पावना जगदुत्तमाः।
ऋते दधि घृताभ्याम च नेह यज्ञः प्रवर्तते ।।
पयसा हविषा दध्ना शता मूत्रचर्मणा ।
अस्थिभिश्चोपकुर्वन्ति बालैरू श्रृंगैश्च भारत ।।
गोभिस्तुल्यम् न पश्यामि धनम् किंचीदिहाच्युत ।
गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाम्या न विद्यते ।।
मातरः सर्वभूतानां गावः सुखप्रदाः ।।

महाभारत

अर्थात् गौएँ सर्वश्रेष्ठ तथा पवित्र, पूजा करने योग्य और संसार में सबसे उत्तम हैं क्योंकि दही, घृत इत्यादि के अभाव में किसी यज्ञ का सम्पादन नहीं हो सकता । हे अच्युत (पार्थ) ! गौएँ दुग्ध से, घृत से, दधि से, गोबर, मूत्र, हड्डियों, बालों और सींगों से हमारा उपकार करती है अतः मैं गौधन के समान अन्य कोई धन नहीं देखता । गौएँ सदा लक्ष्मी की मूल हैं, इनमें पाप (रोग) का निवास नहीं है इसलिए ये प्राणिमात्र के लिए मातृवत सुख देने वाली हैं ।

पुरातन काल से, गाय के दूध को गौरस और 'अमृत' कहा गया है एवं पालन करने के गुणों के कारण गाय को 'गौमाता' कहा गया है ।

घर गौरस जनि जाहु पराए ।
दूध भात भोजन घृत अमृत, अरु आछौ करि दह्यौ जमाए ।।
नव लख धेनु खरिक घर तेरैं, तू कत माखन खात पराए ।
निलज ग्वालिनी देति उरहनौ, वै झूठें करि बचन बनाए ।।
लघु-दीरघता कछु न जानैं, कहुँ बछरा कहुँ धेनु चराए ।
सूरदास प्रभु मोहन नागर, हँसि-हँसि जननी कंठ लगाए ।।

अर्थात् , (माता ने कहा) 'लाल! (तुम्हारे) घरमें ही (पर्याप्त) गोरस हैं, दूसरे के घर मत जाया करो । दूध– भात और घी का अमृततुल्य भोजन है तथा अच्छा करके (दूध गाढ़ा करके) दही जमाया है । तुम्हारे ही घर के गोष्ठ में नौ लाख गायें हैं, (फिर) तुम दूसरे के घर जाकर मक्खन क्यों खाते हो ? (श्याम बोले–) 'ये निर्लज्ज गोपियाँ गढ़ी हुई बातें कहकर झूठ–मूठ उलाहना देती रहती हैं ये बड़े–छोटे का भाव कुछ जानती नहीं, कहीं बछड़े और कहीं गायें चराती घूमती हैं। सूरदासजी कहते हैं कि मेरे स्वामी मोहन तो (परम) चतुर हैं, (उनकी बातें सुनकर) माता ने बार–बार हँसते हुए उन्हें गले लगा लिया ।

प्राचीन भारतीय चिकित्सा शास्त्र आयुर्वेद के ग्रंथों, यथा चरक संहिता , वृक्षायुर्वेद आदि में गौदुग्ध, गौदधि (दही), गाय का घी एवं गौमूत्र के गुणधर्मों का वर्णन करते हुए इनके मानव चिकित्सा में महत्व का वर्णन मिलता है । आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वान् महर्षि धन्वन्तरि ने स्वयं 'पंचगव्य' की अद्‌भुत औषधि मानवता को प्रदान की, ऐसा कहा गया है ।

अपने औषधीय गुणों की वजह से पंचगव्य उत्पादों का चिकित्सा के अतिरिक्त कृषि, खासकर ऑर्गेनिक खेती में जैव–उर्वरक, जैव–कीटनाशक और जैविक खाद के रूप में भी सफलतापूर्वक उपयोग किया जा रहा है । गौमूत्र और नीम के पत्तों का उपयोग करके बनाया गया जैव–कीटनाशक

प्रयोग में सफल और प्रभावी होने के साथ–साथ रासायनिक कीटनाशकों की तुलना में कहीं सस्ता, किसान के लिए बनाने में आसान और पर्यावरण के लिए निरापद, आसानी से विघटित होने वाला पाया गया है । रासायनिक उर्वरकों का कृषि भूमि और खाद्यान्नों पर दुष्प्रभावों को देखते हुए आजकल ऑर्गेनिक खेती को उत्तम माना जा रहा है और इसमें पंचगव्य खाद (गोमय से बनी खाद) एक बेहतरीन जैव–उर्वरक के रूप में साबित हुई है जिसमें फसल को प्रचुर मात्रा में नाइट्रोजन उपलब्ध होती है ।

'गोमय वसते लक्ष्मी' वाक्यांश उपनिषदों में बार–बार कई स्थानों पर प्रयुक्त हुआ है और ये आश्चर्य पैदा करता है कि किस प्रकार धन की देवी लक्ष्मी गोमय (गाय के गोबर) में निवास करेगी ?किन्तु गहराई से और आधुनिक अर्थशास्त्र की दृष्टि से देखें तो वस्तुतः प्राचीन ऋषियों ने एक सर्वकालीन सत्य व्यक्त किया है क्योंकि गोधन से प्राप्त पंचगव्य यथा गोक्षीर, गौदधि, गौघृत, गौमय और गौमूत्र ये सब पंचतत्वों यथा पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और आकाश की शुद्धि करते हैं एवं मानवता के लिए उत्ष्ट पोषक एवं ऊर्जादायक शक्तियों से निहित हैं । गोमूत्र एवं गोमय भूमि की उर्वरा एवं जीवनी शक्ति को बल प्रदान कर हमारा पालन करते आ रहे हैं ।

आज के समय वैज्ञानिक व चिकित्सक सूक्ष्मजीवी रोगाणुओं में बहु – दवा प्रतिरोधी शक्ति आने से, भोजन– श्रृंखला में एंटीबायोटिक दवाओं के अवशेष के खतरों और जीवनशैली बीमारियों के फैलते जाल से चिंतित हैं । बढते प्रदूषण, कृषि में रसायनों के उपयोग के फलस्वरूप भोजन श्रृंखला में कीटनाशकों, भारी धातुओं के अवशेष बढ़ गए हैं और हमारी आतंरिक रोग–प्रतिरोधी शक्ति बुरी तरह प्रभावित हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार बीसवीं सदी की चमत्कारी 'एंटीबायोटिक औषधियां' सन् 2020 आते–आते कारगर ही नहीं रह जायेंगी । ऐसी परिस्थितियों में हमें पहले से उनके विकल्प तैयार रखने होंगे ।

प्रस्तुत सिंहावलोकन पंचगव्य के विस्तृत अनुप्रयोगों, महत्व एवं लाभों को चिन्हित करते हुए वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित विशिष्ट बिन्दुओं

पर प्रकाश डालते हुए समीक्षा का प्रयास है । लेखकों द्वारा संकलित जानकारी पंचगव्य को एक वैकल्पिक रोग–निरोधी/चिकित्सकीय दृष्टिकोण से मानव– चिकित्सा के साथ–साथ पशु–पक्षियों की चिकित्सा में प्रयोग को जनप्रचारित करने के लक्ष्य के साथ जैविक श्रृंखला की धुरी, पवित्र गौमाता के प्रति समर्पण के भाव जागृत करने के लिए प्रस्तुत है।

गाय का दूध –

सुश्रुत संहिता में क्षीर वर्ग में आठ प्रकार के पेय दुग्ध का वर्णन मिलता है एवं गाय के दूध के गुण इस श्लोक में वर्णित हैं –

अल्पामिष्यंदि गोक्षीरम् स्निग्धं गुरु रसायनम्।।
रक्तपित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयोः।।50।।
जीवनीयम् तथा वातपित्तघ्नम् परमम् स्मृतं ।।

अर्थात्, गाय का दूध रोगोत्पादक नहीं, स्निग्ध, गुरु, रसायन, रक्त–पित्तनाशक, शीतल, मधुररस एवं विपाक में मधुर, जीवनदायक, अतिशयेन वात–पित्तनाशक है ।

महाभारत में यक्ष–युधिष्ठिर संवाद में यक्ष पूछता है कि **'अमृतं किम्'**; अमृत क्या है तो धर्मराज युधिष्ठिर उत्तर देते हैं कि **'गवामृतम्'** अर्थात् गाय का दूध ही अमृत है । अन्य खाद्य पदार्थों से तुलना करने पर गाय का दूध वस्तुतः अमृत ही सिद्ध होता है ।

चरक संहिता के सूत्र स्थान, अध्याय 27 में लिखा है कि –

स्वादुशीतम् मृदु स्निग्धं बहलं श्लक्ष्णपिच्छिलं ।
गुरु मंदम् प्रसन्नं च गव्यं दशगुणं पयः ।।216।।
तदेवंगुणमेवौजः सामान्यादभिवर्धयेत् ।
प्रवरं जीवनीयानाम् क्षीरमुक्तंरसायनम् ।।217।।

इस सूत्र में गौदुग्ध के और ओज के समान दस लक्षण बताते हुए गौदुग्ध को ओज को बढ़ाने वाला जीवनीय रसायन बताते हुए श्रेष्ठता का वर्णन है।

- भैंस के दूध की तुलना में भी गाय का दूध कहीं अधिक सुपाच्य, बच्चों के लिए उत्तम, सम्पूर्ण आहार है ।
- भैंस के दूध की अपेक्षा देसी गाय के दूध में उपस्थित फैट (चिकनाई) अधिक सुपाच्य और अभीष्ट मात्रा में होने से गाय का दूध स्फूर्तिदायक होता है ।
- गाय के दूध में उपस्थित फ्लेवोन, स्टेरोल और प्रचुर मात्रा में सरेब्रोसाइड तत्व और पोटैशियम इसे बच्चों के बुद्धि के विकास में सहायक और बुढ़ापे के बौद्धिक ह्रास की रोकथाम में सहायक हैं।
- भैंस के दूध की अपेक्षा हल्का और सुपाच्य होने के साथ–साथ गौदुग्ध पेट की अम्लता को कम करके पेप्टिक अलसर आदि रोगों में कारगर रहता है ।
- इसका बीटा कैरोटीन तत्व शरीर में विटामिन ए में बदल कर बच्चों को नेत्र ज्योति विकार और रतौंधी से बचाता है । प्रतिदिन 250 मिलीलीटर गाय का दूध विटामिन ए की 75 प्रतिशत मांग की पूर्ति कर देता है ।
- गाय के दूध का प्रोटीन 94 प्रतिशत पाच्य और उच्च जैविक मूल्य का प्रोटीन है लेकिन भैंस के दूध से कम मात्रा में है जो इसे बच्चों और शिशुओं के लिए, गुर्दे के रोगों में, भैंस के दूध की अपेक्षा अधिक पोषक और गुणकारी बनाते हैं ।
- देसी गाय के दूध में निरापद एवं स्वास्थ्यकर ए 2 प्रकार का बीटा–केसीन (casein) प्रोटीन पाया जाता है जबकि विदेशी नस्लों की गाय के दूध में पाए ए 1 प्रकार के बीटा–केसीन प्रोटीन वाले दूध के उपयोग को वर्तमान में वैज्ञानिक अनेक रोगों के लिए जिम्मेदार मान रहे हैं।

- ❖ गाय के दूध में उपस्थित बी काम्प्लेक्स विटामिन मुख्यतः बी–2 , बी–3 और जस्ता शरीर की रोग प्रतिरोधी शक्ति को बढ़ाते हैं और अग्न्याशय से इन्सुलिन के स्त्राव को भी बढ़ाते हैं ।
- ❖ गाय के दूध में पाया जाने वाला संयुग्मित लिनोलिक अम्ल शरीर में कैंसर कोशिकाओं के बनने और फैलने को रोकता है ।
- ❖ प्रतिदिन 2 गिलास (500 मिलीलीटर) गाय का दूध शरीर में कैल्शियम की पूर्ति करके हड्डियों और स्नायु तंत्र को पुष्ट रखता है ।

गौदधि (गाय के दूध से बनाया गया दही)

कायचिकित्सा आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ भावप्रकाश में गौदधि के गुणों का वर्णन इस प्रकार है –

गव्यं दधि विशेषेण स्वादवम्लम् च रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं हृदयं पुष्टित् पवनापहम् ।।
उक्तंदध्नामशेषाणाम् मध्ये गव्यं गुणाधिकम् ।।

अर्थात्, गाय के दूध का दही अन्य सभी दही से अधिक गुणकारी, रुचिकर एवं खट्टे स्वाद का, पुष्टिकर (बलकारक) , अग्नि (जठराग्नि) को दीप्त करने वाला पौष्टिक एवं वातनाशक है ।

- ❖ गाय के दही से बने मट्ठे (छाछ) में जल, सेंधा लवण, राई एवं हल्दी के योग से गौतक्रासव बनाया जाता है जो कब्जीयत दूर करके बवासीर में अत्यंत लाभकारी है । पाचन–तंत्र के रोगों यथा, एसिडिटी, अपच, आफरा,गैस एवं भूख न लगने की समस्याओं में लाभकारी है ।
- ❖ दही एवं छाछ में भरपूर कैल्शियम होता है और विटामिन 'डी' भी होता है । दही जमी हुई होने के कारण एवं लैक्टिक अम्ल की उपस्थिति के कारण दही / छाछ में से कैल्शियम अधिक आसानी से अवशोषित होता है । वृद्धजनों में, जिनको दूध नहीं पचता उनके लिए दही / छाछ का सेवन एक अच्छा विकल्प है ।

- ❖ गर्मियों के दिनों में ठंडी छाछ बाज़ार में बिकने वाले हानिकारक कैफीन युक्त शीतल पेयों से कहीं अधिक राहत एवं संतुष्टि देने वाला, प्यास बुझाने वाला स्वास्थ्यवर्धक पेय है ।
- ❖ दही एवं छाछ में पाया जाने वाला बैक्टीरिया लैक्टोबेसिलस एसिडोफिलस आँतों में लाभदायक बैक्टीरिया के रूप में, प्रोबायोटिक के रूप में गुणकारी है ।
- ❖ नवजात बछड़ों में दस्त लगने पर भी छाछ का प्रयोग लाभदायक होता है।
- ❖ मक्खन निकालने के बाद बचे मट्ठे को, दुधारू जानवर को दूध बढ़ाने के लिए और बैलों में ताकत बढ़ाने के लिए पिलाते हैं ।

गौमूत्र (देसी गाय का मूत्र)

कायचिकित्सा आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ भावप्रकाश में गौमूत्र के गुणों का वर्णन इस प्रकार है–

गौमूत्रं, कटुः तीक्ष्णोष्ण, क्षार तिक्तकशायकम् ।
लघ्वाग्नि दीपनं, पित्त कृत्कफ वात नुत ।।
शूल, गुल्म,उदर, आनाह कंदु अक्षि मुखरोगजित् ।
कि लासगद् वातं वस्ति कुष्ठ नाशकम् ।।
कास, स्वासापहम् शोथ, कामला पांडु रोग हरत् ।
कण्डु विलास गद्, शूलम्, मुख अक्षिरोगान् ।।
गुल्म,अतिसार,मरुदामय, मुखरोधान् ।
कास, सकुष्ठ जठर, कृमि, पाण्डुरोगान ।।
गोमूत्रं एकम् पिवेत पाक, करोति ।
सर्वेष्वपि व मूत्रेषु गौमूत्रं गुणोतोऽधिकम् ।।
अतो अविशेषात्कथने, मूत्रं गोमूत्र उच्यते ।
प्लीहा, उदर, श्वास कास, शौथ, वर्चो ग्रहापहम् ।।
शूल, गुल्मअर्श अनाह, कामला, पांडु रोग जित् ।
कषाय, तिक्त तीक्ष्ण, पूरणात्कर्ण शूलहृत ।।

–(अध्याय 19 ,श्लोक 1 से 6 , भावप्रकाश पूर्ण खण्ड)

अर्थात्, गौमूत्र चरका, तेज़, गरम, क्षार, कड़वा, कसैला, लवण अनुरस लघ्वाग्नि दीपन, मस्तिष्क के ज्ञान तंतुओं को बढ़ाने वाला, वात–कफ नाशक, पित्त करने वाला है । पेट में दर्द, वायुगोला, पेट के अन्य रोग, खुजली, नेत्र रोग, मुख के सभी रोगों को नष्ट करता है । श्वित्र (सफेद दाग), रक्त विकार, सभी कुछ ठीक हो जाते हैं । कास, श्वास शोथ, पीलिया, रक्ताल्पता, अतिसार, वायु के सभी रोग, सभी कीटाणु नष्ट करता है । गौमूत्र एक (अकेला) ही पीने से विकार नष्ट कर देता है । सभी प्रकार के मूत्रों से गुण अधिक हैं । यत, तिल्ली, उदर रोग, सूजन, दस्त साफ न आना, बवासीर, कान में डालने से कान के रोग नष्ट होते हैं । आँव में वृद्धि, मूत्र रोग, स्नायु विकार, अस्सी प्रकार के वात रोग नष्ट होते हैं । सारांश ये है कि सम्पूर्ण रोगों पर एक अकेला गौमूत्र ही पूर्ण सक्षम है ।

- ❖ गौमूत्र और नीम की पत्तियों के संयोग से एक जैव–कीटनाशक बनाया गया है जो कि रासायनिक कीटनाशकों की तुलना में हमारे लिए एवं पर्यावरण के लिए निरापद और एक प्रभावी विकल्प है ।
- ❖ गौमूत्र का वर्मीकम्पोस्ट बनाने में उपयोग किया गया है । इस प्रकार बनी कम्पोस्ट में पौधों के लिए मुख्य एवं सूक्ष्ममात्रिक पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए गए और इस प्रकार बनी कम्पोस्ट ने अल्फा–अल्फा घास के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि की ।
- ❖ **'मूत्रेषु गौमूत्रं गुणतोऽअधिकम् । अविशेषात् कथने, मूत्रं गौमूत्रमुच्यते ।'** अर्थात्, सभी प्रकार के मूत्रों में से गौमूत्र में अधिक गुण हैं ।
- ❖ गौमूत्र मात्र एक उत्सर्जित पदार्थ नहीं है इसमें 95 प्रतिशत जल, 2.5 प्रतिशत यूरिया, और बाकी बचा 2.5 प्रतिशत हिस्सा लवणों, हॉरमोंस, एंजाइम्स और सूक्ष्ममात्रिक औषधि तत्वों का होता है ।
- ❖ गाँवों में गौमूत्र को एंटीसेप्टिक और निसंक्रामक द्रव्य के रूप में घाव धोने, चर्मरोग में प्रयोग किया जाता रहा है । गौमूत्र में उपस्थित

यूरिया, स्वर्ण क्षार, कार्बोलिक अम्ल, कॉपर, मैंगनीज़ के कारण गौमूत्र का एक अच्छा एंटीसेप्टिक होना बताया गया है ।

❖ अनेक अध्ययनों से ये स्पष्ट हो रहा है कि गौमूत्र में शरीर की रोग–प्रतिरोधक शक्ति को अच्छे रूप में प्रभावित करने वाले कारक (इम्यूनोमॉड्यूलेटर) हैं। इस कारण गौ मूत्र को आयुर्वेद में 'रसायन तत्व' कहा गया है । ये कारक केवल देसी गाय के मूत्र में ही पाए गए हैं ।

❖ गौमूत्र के सेवन से शरीर के हानिकारक टॉक्सिन निष्प्रभावी होकर बाहर निकल जाते हैं ।

❖ एक रिपोर्ट के अनुसार गौमूत्र चिकित्सा से शरीर में चयापचय क्रिया में बनने वाले हानिकारक मुक्त मूलक कम हो जाते हैं और इस प्रकार ये शरीर में होने वाले अधोगति परिवर्तनों को मंद कर देता है ।

❖ आयुर्वेद में कहा गया है कि **'सर्वे रोगाः हि मंदाग्नौ'** अर्थात् सभी रोग मन्दाग्नि (कम पाचन और मेटाबोलिक क्षमता) से होते हैं । आयुर्वेद में गौमूत्र को हल्का पित्तकारक और अग्नि को बढाने वाला बताया गया है ।

❖ पूर्णतया स्वस्थ, देसी गाय का ताज़ा गौमूत्र का सेवन आयुर्वेद में मानव चिकित्सा में किया जाना निर्दिष्ट है जिसे आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह के अनुसार किया जाता है । किन्तु मूत्र होने की वजह से, स्वाद में अच्छा न होने तथा प्रत्येक के घर गौपालन न होने से गौमूत्र चिकित्सा आमजन में सहज संभव एवं स्वीकार्य नहीं हो पाती । गौमूत्र का आसवन करके गौमूत्र अर्क का उपयोग भी सामान प्रभावकारी बताया गया है । ऐसा करने से गौमूत्र हानिकारक यूरिया और सूक्ष्मजीवों से भी मुक्त होता है एवं अधिक दिन तक रक्खा जा सकता है । गौमूत्र अर्क में गुड़, लौंग, जायफल, केशर आदि

मिलाकर 'गौतीर्थ' फॉर्मूला बनाया जाता है जो स्वाद की दृष्टि से अधिक स्वीकार्य है ।

- ❖ जो लोग गौमूत्र का तरल रूप में सेवन नहीं कर सकते, उनके लिए गौमूत्र घनवटी 600 मिलीग्राम (खाने की गोली) भी बाज़ार में उपलब्ध है, जो पानी के साथ ली जा सकती है ।
- ❖ 'गौमूत्र हरीतकी वटी' गौमूत्र, हरड़, सौंफ, बालम आदि के योग से बनती है और आयुर्वेद में मुखरोगों में प्रयोग होती है ।
- ❖ आयुर्वेद में गौमूत्र को 'संजीवनी' कहा गया है एवं अनेक आयुर्वेदिक योगों (फॉर्मूलों) में गौमूत्र का उपयोग किया जाता है ।
- ❖ गौमूत्र के योग से बनाया गया 'बाल पाल रस' बच्चों में मेधावर्धक, स्वास्थ्यवर्धक आयुर्वेदिक औषधि के रूप में 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों में प्रयोग होता है ।

गौघृत (देसी गाय का घी)

- ❖ पारंपरिक रूप से गाय के घी मानसिक बल प्रदान करने वाला, पुष्टिकर, वीर्यवर्धक द्रव्य माना गया है ।
- ❖ हृदयरोगी के लिए भी अन्य खाद्य तेलों और वनस्पति घी की तुलना में गाय का घी उपयोग करना आधुनिक चिकित्सकों द्वारा भी अधिक निरापद माना जा रहा है ।
- ❖ गाय के घी और कपूर के योग का त्वचा पर उपयोग करने से चर्मरोगों, जलने, कटने में लाभ होता है ।
- ❖ आयुर्वेदिक चिकित्सा में गाय के घी को नाक में डाल कर एलर्जी, मानसिक रोग, मायग्रेन आदि रोगों की चिकित्सा की जाती है ।
- ❖ देसी गाय के घी के योग से बना 'पंचगव्य घृत' मिर्गी, दिमाग़ी कमज़ोरी, पागलपन, बवासीर, विषमज्वर, याददाश्त की कमी आदि समस्याओं में आयुर्वेदिक उपचार में प्रयोग होता है ।

गोमय (देसी गाय का गोबर)

- ❖ गोमय एक शक्तिशाली उर्वरक है । जबकि रासायनिक उर्वरक एक फसल में तीन–तीन बार डालने पड़ते हैं, गोमय का प्रयोग एक ही बार कर देने से पर्याप्त नाइट्रोजन प्राप्त हो जाती है ।
- ❖ आज के युग में आर्गेनिक खेती के उत्पादों की बाज़ार में भारी मांग है क्योंकि लोग अब रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के दुष्प्रभावों को समझने लगे है । गाय के गोबर से बेहतरीन कम्पोस्ट एवं केंचुआ खाद बना सकते है । गाय के गोबर और मिट्टी मिलाकर लेप किये अनाज कोठारों और दीवारों से कीट–पतंगे, मक्खी–मच्छर दूर भागते हैं और महंगे कीटनाशकों के दुष्प्रभावों से भी बचत होती है ।
- ❖ आज जब एल.पी.जी. रसोई गैस के दाम बढ़ते जा रहे हैं, ऐसे में गौपालक भाई गोबर गैस प्लांट लगवा कर रसोई गैस की चिंता से मुक्त हो सकते हैं । 3–4 पशुओं के गोबर से 2 घन मीटर का गोबर गैस प्लांट चलाकर प्रतिदिन 1.7–2.4 घन मीटर बायो गैस का उत्पादन हो सकता है जिससे आराम से 5 लोगों के छोटे परिवार की रसोई गैस की पूर्ति की जा सकती है ।
- ❖ गोमय के उपलों की राख पवित्र, कीटाणुरहित और शुद्ध होती है । गाँव में जो राख से बर्तन मांजे जाते थे, उनका वैज्ञानिक आधार था ।
- ❖ गोमय की धूप के प्रयोग से वातावरण दुर्गन्धरहित, सुखप्रद और कीटमुक्त होता है ।
- ❖ गोमय की राख का प्रयोग दन्त मंजन बनाने में किया जाता है । ऐसा दन्त मंजन दांतों और मसूढ़ों को सशक्त बनाकर दन्त रोगों एवं पायरिया से बचाता है ।

अथर्ववेद में लिखा है कि, **'एतद् वै विश्वरूपम् सर्वरूपं गोरूपम्'** अर्थात् गाय संपूर्ण विश्व–ब्रह्माण्ड का रूप है । किन्तु, आज गायों पर भीषण अत्याचार हो रहा है। प्रतिदिन सुबह होते ही लाखों गायों की मांस के

लिये निर्मम हत्या कर दी जाती है । एक गाय अपने जीवन काल में पंचगव्यों द्वारा सात्विक एवं पौष्टिक आहार प्रत्यक्ष रूप से हजारों मनुष्यों को प्रदान करती है जिससे मानव का शरीर स्वस्थ, मन पवित्र

और बुद्धि तीक्ष्ण हो जाती है। भारत में गाय को माता कहा जाता है जबकि विश्व के दूसरे देशों में गाय को पूजनीय नहीं माना जाता। भारतीय गोवंश मानव का पोषण करता रहा है, जिसका दूध, गोमूत्र और गोबर अतुलनीय है। सुख–समृद्धि की प्रतीक रही भारतीय गाय आज गोशालाओं में भी उपेक्षित है। अधिक दूध के लिए विदेशी गायों को पाला जा रहा है, जबकि भारतीय नस्ल की गायें आज भी कहीं अच्छा व गाढ़ा दूध देती हैं । ब्राजील में भारतीय गोवंश की नस्लें सर्वाधिक दूध दे रही हैं। गौशाला में देशी गोवंश के संरक्षण, संवर्द्धन की परंपरा भी खत्म हो रही है। हमारी गोशालाएं 'डेयरी फार्म' बन चुकी हैं, जहां दूध का ही व्यवसाय हो रहा है। जबकि देसी गाय कम खाकर भी उत्कृष्ट गव्य 'पंचगव्य' प्रदान करती है । देसी गाय दुधारू अगर नहीं भी हो तब भी अपने गौमूत्र व गोमय से लाभ देती रह सकती है । आधुनिक युग में आमजन गौपालन से दूर होकर पंचगव्य के औषधीय गुणों को भूल गए हैं और बाज़ार अर्थव्यवस्था में अपना धन और स्वास्थ्य दोनों गँवा रहे हैं।

आज इस बात की जरूरत है कि इन उत्पादों का दुबारा वैज्ञानिक तरीके से प्रतिपादन कर प्रचार प्रसार किया जाये । इस को दृष्टिगत करते हुए राजस्थान सरकार ने राजस्थान पशु–चिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय एवं राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय के बीच एम.ओ.यू. को

प्रेरित कर पंचगव्य अनुसन्धान एवं सूचना विनिमय का मार्ग प्रशस्त किया है। गौ–चिकित्सा / पंचगव्य की मानी हुई आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को आज भी अधिकाँश लोग चमत्कार, मिथक या पौराणिक मान कर खारिज कर रहे हैं और उसके लाभ से वंचित हैं । किन्तु, हाल के वर्षों में विश्व के वैज्ञानिक समुदाय में भारतीय तकनीकी जानकारी के विकार या उसकी वैज्ञानिक वैधता स्थापित करने में रुचि पैदा हुई है ताकि एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रूप में उसका विकास किया जा सके। आधुनिक ऐलोपैथिक दवाओं के प्रति सूक्ष्मजीवों में बढ़ती प्रतिरोधक क्षमता, दवाओं के भोजन–श्रृंखला में

अवशेषों के दुष्प्रभावों ने सभी को चिंतित किया है । इसलिए औषध विज्ञान, कृषि, फार्मास्यूटिकल, तकनीक के क्षेत्रों में इस पर मिल–जुल कर प्राथमिकता के आधार पर काम किया जाये तो हमें पंचगव्य उत्पादों के रूप में नयी पीढ़ी के लिए नए चिकित्सकीय साधन प्राप्त हो सकते हैं ।

तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभारः

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) त्रिभुवन शर्मा

अधिष्ठाता

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

–:: सम्पर्क सूत्र ::–

प्रो. (डॉ.) ए. पी. सिंह

प्रमुख अन्वेषक

9414139188

डॉ. अशोक गौड़

सहायक आचार्य

9461906288

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र, बीकानेर-334001(राज.)

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर मो. : 9784105819